स्पर्श

भाग 2

कक्षा 10 के लिए हिंदी
(द्वितीय भाषा) की पाठ्यपुस्तक

स्पर्श

भाग 2

कक्षा 10 के लिए हिंदी (द्वितीय भाषा) की पाठ्यपुस्तक

© NCERT not to be republished

स्पर्श

भाग 2

कक्षा 10 के लिए हिंदी (द्वितीय भाषा) की पाठ्यपुस्तक

© NCERT not to be republished

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

जनवरी 2007 माघ 1928

पुनर्मुद्रण

नवंबर 2007 कार्तिक 1929
जनवरी 2009 पौष 1930
दिसंबर 2009 पौष 1931
नवंबर 2010 कार्तिक 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
अक्तूबर 2012 आश्विन 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
दिसंबर 2015 पौष 1937
दिसंबर 2016 पौष 1938
दिसंबर 2017 अग्रहायण 1939

PD 300T RSP

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2007

₹ 60.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा एल.पी.पी. प्रिंट पैकेजिंग प्राइवेट लिमिटेड, 28/1/10, साइट-IV, साहिबाबाद इंडस्ट्रियल एरिया, साहिबाबाद, ज़िला गाज़ियाबाद (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-647-0

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 — फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 — फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 — फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 — फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 — फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: *एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक	: *श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	: *गौतम गांगुली*
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी)	: *अरुण चितकारा*
संपादक	: *नरेश यादव*
उत्पादन सहायक	: *ओम प्रकाश*

आवरण एवं चित्र

कल्लोल मजूमदार

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस, और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रो. नामवर सिंह और इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया; इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

© NCERT not to be republished

भूमिका

पाठ्यपुस्तकों को वर्तमान सरोकारों के अनुरूप अद्यतन बनाने की प्रक्रिया स्वरूप 2005 में नयी पाठ्यचर्या तैयार की गई। इस पाठ्यचर्या में सुझाए उद्देश्यों और मूल्यों के मद्देनज़र नवीन पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया। नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित हिंदी भाषा की पुस्तक में हिंदी अपने व्यापक रूप में खड़ी बोली, ब्रज, अवधी और राजस्थानी आदि अनेक बोलियों का समुच्चय है। इसके अतिरिक्त हिंदी का एक दूसरा रूप भी है जिसकी प्रकृति राष्ट्रीय है। इस व्यापक रूप में हिंदी अन्य भारतीय भाषाओं के साथ संपर्क सूत्र का काम करती है और भारत की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति का साधन बनती है।

द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी के पठन-पाठन का सीधा संबंध हिंदी के इसी रूप से है। द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने वाले विद्यार्थी मूलतः वे होते हैं जिनकी मातृभाषा हिंदी न होकर कोई अन्य भारतीय भाषा होती है। प्रथम भाषा के रूप में उन्होंने हिंदी का अध्ययन इससे पहले नहीं किया होता है। यद्यपि इन विद्यार्थियों को प्राथमिक स्तर पर किसी अन्य भारतीय भाषा (जो उनके प्रांत/क्षेत्र की भाषा हो) के अध्ययन का अवसर मिल चुका होता है तथा दसवीं कक्षा तक आते-आते वे पिछले चार वर्षों से हिंदी भाषा सीखने की प्रारंभिक प्रक्रिया से गुज़र चुके होते हैं। वे हिंदी भाषा के चारों कौशलों से तथा हिंदी साहित्य के विभिन्न रूपों से भी परिचित हो चुके होते हैं। अतः यहाँ गद्य पाठों का संकलन इस दृष्टि से किया गया है कि इन विद्यार्थियों को विविध भाषा-प्रयोगों और व्यवहारों से परिचित कराया जा सके, जिससे भाषा अधिक प्रभावपूर्ण और संप्रेषणीय बनती है। इसके साथ ही इस बात का भी प्रयत्न किया गया है कि इस कक्षा के छात्र हिंदी के मूर्धन्य रचनाकारों के साथ-साथ हिंदीतर एवं भारतेतर रचनाकारों की लेखन शैली से भी परिचित हो सकें।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में गद्य की यथासंभव विविध विधाएँ संकलित करने का प्रयास किया गया है। इन पाठों द्वारा विद्यार्थियों को वैचारिक और ललित निबंधों के अतिरिक्त संस्मरण, व्यंग्य, कहानी, फ़िल्म के यादगार क्षणों को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाले सजीव, सरस एवं पाठक को मंत्रमुग्ध करने वाली शैली में वर्णित विवरणों का सामान्य परिचय मिल सकेगा। साथ ही इस पाठ्यपुस्तक में लोककथा और एकांकी को भी स्थान दिया गया है।

© NCERT not to be republished

दसवीं कक्षा के लिए निर्मित द्वितीय भाषा की पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' भाग 2 में निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखा गया है–

1. मनुष्य की भावनाएँ और संवेदनाएँ एकसमान होती हैं। वह चाहे किसी भी देश या प्रांत का हो मानवीय अनुभूतियाँ सर्वत्र एकसमान होती हैं। फलस्वरूप हर भाषा का साहित्य तत्कालीन समाज की प्रतिच्छाया ही होता है।

   कक्षा 10 'ब' पाठ्यक्रम के छात्र चाहे किसी भी प्रांत के हों उनकी भाषिक और बौद्धिक क्षमता का आकलन करने के पश्चात् ही स्पर्श भाग 2 की पाठ्यसामग्री का चयन किया गया है। इस पाठ्यपुस्तक में विद्यार्थियों को व्याकरण संबंधी ज्ञान अलग पुस्तक में न देकर इसी पुस्तक के माध्यम से ही दिया गया है।

2. संसार में आने के बाद शिशु सबसे पहले लोरी सुनकर भाव तल्लीन होता है तत्पश्चात कुछ बड़ा होने पर कथा साहित्य को सुन कौतूहल और कल्पना के संसार में गोते लगाने लगता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर इस बार पाठ्यसामग्री के संयोजन में पद्य खंड को पहले एवं गद्य खंड को बाद में रखा गया है।

   पद्य खंड में कविताओं का क्रम निर्धारण कवियों के काल क्रमानुसार किया गया है केवल कैफ़ी आज़मी और रवींद्रनाथ ठाकुर की रचनाएँ बाद में रखी गई हैं। गद्य खंड में सरलता से कठिनता की ओर ले जाने के शैक्षिक उद्देश्य की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए पाठों का क्रम निर्धारण किया गया है।

3. पाठों में विभिन्न प्रकार के प्रश्न-अभ्यासों द्वारा विद्यार्थियों की भाषिक अभिव्यक्ति और व्याकरण संबंधी उनके ज्ञान को अधिक बेहतर बनाने का प्रयत्न किया गया है। आशा है इस पुस्तक के माध्यम से वे हिंदी भाषा पर अपनी पकड़ मज़बूत करने में सफल हो सकेंगे।

4. कक्षा 10 तक आते-आते विद्यार्थियों की भाषा की समझ उन्हें साहित्य में निहित पाठ के मूल केंद्रीय भाव को समझने में सक्षम बनाती है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए गद्य पाठों में फोलियो के चित्र संयोजन द्वारा यह प्रयास किया गया है कि छात्र गद्य के पाठों में निहित केंद्रीय भाव को आत्मसात कर सकें। यथा–

   i) 'बड़े भाई साहब' में पतंग के माध्यम से आकाश में कुलाँचे भरते बालमन में उठती आकांक्षाओं को दर्शाते हुए बताया गया है कि पतंग की डोर को कसकर रखना और ढील देना भावनाओं को किस प्रकार मर्यादित करना है यह स्पष्ट करता है।

   ii) 'डायरी का एक पन्ना' बताता है कि भावनाएँ जब उद्वेलित हो उठती हैं तो वर्तमान में उपलब्ध आधुनिक कंप्यूटरीकृत सुविधाओं के उपलब्ध न होने पर भी किसी ज़माने में पंख भी भावनाओं को शब्दबद्ध करने का सफल साधन बन जाता था, इस तथ्य द्वारा प्राचीनतम 'लेखनी' से छात्रों को परिचित कराया गया है।

© NCERT not to be republished

iii) लोककथा पर आधारित 'तताँरा–वामीरो कथा' दर्शाती है कि तलवार चाहे लकड़ी की ही क्यों न हो, जर्जर रूढ़ियाँ जब बंधन बनकर जीवन को बोझिल कर देती हैं तब उन्हें तोड़ने के लिए लकड़ी की तलवार में भी धरती का सीना चीर डालने की शक्ति आ जाती है।

iv) अंत:करण में जब भावनाओं की वेगवती प्रवाहित होती है तो वह अभिव्यक्ति स्वरूप कविता, कहानी, नाटक, फ़िल्म, चित्रकला या किसी अन्य शिल्प का रूप धारण कर समाज के समक्ष उपस्थित हो जाती है। सहृदय सामाजिक उसका रसास्वादन करता है और भाँति–भाँति से सराहता है।

'तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र' में एक गीतकार के कवि हृदय की अकुलाहट एक फ़िल्म निर्माता का रूप लेकर लोगों के समक्ष आई।

v) 'गिरगिट' कहानी में निहित व्यंग्य को मुखौटे द्वारा प्रदर्शित करके विद्यार्थियों में इस केंद्रीय भाव को पकड़ने की समझ पैदा करने का प्रयास किया गया है कि आज के व्यवहारवादी युग में पल–पल में हम बिना किसी हिचकिचाहट के मुखौटा बदलते रहते हैं।

vi) 'अब कहाँ दूसरों के दुख से दुखी होने वाले' कहानी में प्राणीमात्र के प्रति प्राणी की भावना ही जीवन है, यह बताया गया है। हम सभी ऊपर वाले के बंदे हैं और वह अपने सभी बंदों को उसी भाँति एकसमान प्यार करता है जैसे माँ अपने सभी बच्चों में बिना भेद–भाव के एकसमान स्नेह–ममता बाँटती है। न कोई छोटा है न कोई बड़ा, फिर वह चाहे चींटी ही क्यों न हो।

vii) 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' बताती हैं कि सरदी, गरमी, धूप, बरसात, आँधी, तूफ़ान को झेल चुका जीवन, जीवन के सत्य अनुभवों से ओत–प्रोत होता है। फिर चाहे वे 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' ही क्यों न हों, वे भी जीवन की सच्चाई का संदेशा दे जाती हैं।

5. कक्षा 9 के लिए निर्मित स्पर्श भाग 1 के गद्य खंड और पद्य खंड के प्रारंभ में गद्य और कविता के पठन–पाठन से संबंधित कुछ बातों का उल्लेख कर दिया गया है। अत: उन्हें यहाँ दोहराया नहीं जा रहा। आशा है अध्यापकों को इससे गद्य के पाठों और कविता के अध्यापन में सहायता मिली होगी। उन बातों का वे इस पुस्तक के शिक्षण में भी प्रयोग कर सकते हैं। पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु अध्यापकों एवं छात्रों की सुविधा के लिए यहाँ कुछ बातों को पाठों के संदर्भानुसार समझने हेतु पुन: दिया जा रहा है।

गद्य विचार-बोध

गद्य में भावों की अपेक्षा विचारों की प्रधानता होती है जिन्हें लेखक सुसंबद्ध अनुच्छेदों द्वारा अभिव्यक्त करता है। पाठ में अनुच्छेदों का महत्त्व होता है अत: उसी क्रम में पढ़ाया जाना चाहिए। पाठ पढ़ने के बाद उसके प्रभाव की पकड़ का परीक्षण किया जाना चाहिए। विचार–बोध के प्रश्न समग्र पाठ

को समझने में सहायक सिद्ध होते हैं। पूर्ण प्रभाव के लिए पाठ में आए उन छोटे-छोटे विचारों के परस्पर संबंधों पर भी विचार करना चाहिए जो समग्र प्रभाव बनाने में सहायक होते हैं। यथा, पाठ 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' के अंश–*गांधीजी कभी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे। बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाते थे। वे सोने में ताँबा नहीं बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे।*

भाषा-प्रयोग

पाठ में आए हुए विविध भाषा-प्रयोग विद्यार्थियों के भाषा-सीखने एवं उनकी संप्रेषण-क्षमता के विकास में सहायक हो सकते हैं। पठन-पाठन के समय उन पर अवश्य ध्यान दिया जाना चाहिए। प्रश्न-अभ्यासों में दिए गए भाषा-प्रयोग तो बानगी मात्र हैं। हाँ, उन्हें आधार के रूप में अवश्य स्वीकार किया जा सकता है। ध्यान दिया जाना चाहिए कि कहावतों और मुहावरों के प्रयोग से भाषा अधिक सहज, व्यंजक, प्रभावपूर्ण और संप्रेषणीय बनती है। वाक्य के स्वाभाविक क्रम को कभी-कभी बदल देने से भी अभिव्यक्ति अधिक सशक्त बन जाती है। कहानी 'बड़े भाई साहब' की निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए–

तुमने तो अभी केवल एक दरजा पास किया है और अभी से तुम्हारा सिर फिर गया, तब तो तुम आगे पढ़ चुके। यह समझ लो कि तुम अपनी मेहनत से नहीं पास हुए, अंधे के हाथ बटेर लग गई। मगर बटेर केवल एक बार हाथ लग सकती है, बार-बार नहीं लग सकती। कभी-कभी गुल्ली-डंडे में भी अंधा-चोट निशाना पड़ जाता है। इससे कोई सफ़ल खिलाड़ी नहीं हो जाता। सफ़ल खिलाड़ी वह है, जिसका कोई निशाना खाली न जाए।

निश्चय ही इस प्रकार के प्रयोगों से भाषा में रवानगी आने के साथ-साथ अभिव्यक्तिगत सौंदर्य भी बढ़ जाता है। ऐसे प्रयोगों पर न केवल ध्यान दिया जाना चाहिए बल्कि उनके अधिकाधिक प्रयोग को भी प्रोत्साहित करना चाहिए।

कविता

यद्यपि कविता-शिक्षण के सैद्धांतिक पक्ष की विवेचना 'स्पर्श भाग 1' में की जा चुकी है तथापि प्रस्तुत संकलन की कुछ रचनाओं को लेकर पहले कही हुई बातों को विद्यार्थियों की कविता की समझ को और दृढ़ करने हेतु कुछ बातों को दोहराया जा रहा है।

विद्यार्थियों के किशोर मन को कविता विशेष रूप से प्रभावित करती है, क्योंकि किशोर मन सरल, जिज्ञासु और रागात्मक होता है। कविता किशोर भावनाओं के परिष्कार, संवेदनशीलता के विकास एवं सुरुचि निर्माण में तो योगदान करती ही है, साथ ही यह छात्रों में सुपाठ की क्षमता भी उत्पन्न करती है।

© NCERT not to be republished

उल्लेखनीय है कि हिंदीतर विद्यार्थी अपनी मातृभाषा की कविताओं और उनके नाद, भाव तथा विचार-सौंदर्य से सुपरिचित होते ही हैं। इस संकलन की कविताओं का तादात्म्य उनकी मातृभाषा में रचित कुछ कविताओं से बिठाकर काव्य-शिक्षण को और अधिक रुचिकर तथा उपयोगी बनाया जा सकता है।

काव्य-पाठ

कविता के आनंद का अनुभव तो कवि मुख से कविता का पाठ सुनकर ही मिलता है। वस्तुतः कवि अपनी कृति को सर्वाधिक सजगतापूर्वक उचित लय और प्रवाह के साथ वाचन करता है। परंतु सर्वदा ऐसा संभव नहीं है। अतः अन्य जो कोई भी काव्य पाठ करे उसे इस तथ्य को स्मरण रखना चाहिए कि कविता गद्य नहीं है, अतः गद्य की भाँति नहीं पढ़ी जाती। लय और प्रवाह ही उसे गद्य से भिन्न बनाते हैं। वाचन मौन हो या मुखर, लय और प्रवाह के साथ ही होना चाहिए। लय का निर्धारण काव्य-पंक्तियों में विद्यमान गति, विराम-चिह्न, मात्रा तथा तुक से होता है। मात्राओं के घटने-बढ़ने से उसके प्रवाह में रुकावट आती है। अतः वाचन में शब्दों के उच्चारण का निर्दोष होना आवश्यक है। संयुक्ताक्षरों का शुद्ध उच्चारण न होने पर भी कविता की लय टूट जाएगी और वह कर्णकटु बन जाएगी। उदाहरणस्वरूप 'मनुष्यता' कविता की इन पंक्तियों को पढ़िए–

अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।
रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

यहाँ अंतरिक्ष, परस्परावलंब, अमर्त्य-अंक आदि का उच्चारण सही न होने पर कविता का पाठ ठीक से न हो सकेगा और वह प्रभावहीन हो जाएगी।

आशा है अध्यापकों को उपर्युक्त विवरण से गद्य के पाठों और कविता के अध्यापन में सहायता मिलेगी। वे इस पुस्तक के शिक्षण में इनका प्रयोग कर शिक्षण को रोचक बना सकते हैं। पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु अध्यापकों एवं छात्रों के सुझावों का स्वागत है।

© NCERT not to be republished

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतदद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली।

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, *प्रो.फ़ेसर,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली।

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रो.फ़ेसर एवं अध्यक्ष,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

सदस्य

अनुपम मिश्र, *सचिव,* गांधी शांति प्रतिष्ठान, नयी दिल्ली।

उर्मिला शर्मा, *अध्यापिका,* जवाहर नवोदय विद्यालय, जाफ़रपुर, नयी दिल्ली।

कामिनी भटनागर, *प्रवक्ता,* सी.आई.ई.टी, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

पद्मजा प्रधान, *वरिष्ठ अध्यापिका,* डी.एम. स्कूल, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी., भुवनेश्वर।

प्रदीप जैन, *वरिष्ठ अध्यापक,* मॉडर्न स्कूल, बाराखंबा रोड, नयी दिल्ली।

रवींद्र कात्यायन, *प्रवक्ता,* हिंदी विभाग, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुंबई।

विशम्भर, *संपादक,* शिक्षा विमर्श, टोडी रमजानपुरा, जयपुर।

वीरेंद्र जैन, *पत्रकार,* सांध्य टाइम्स, नयी दिल्ली।

सदस्य-समन्वयक

स्नेहलता प्रसाद, *पूर्व प्रो.फ़ेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

© NCERT not to be republished

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में अकादमिक सहयोग के लिए परिषद् विशेष रूप से आमंत्रित दिलीप सिंह, *रजिस्ट्रार,* दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई; उषा शर्मा, *प्रवक्ता,* डी.आई.ई.टी., मोती बाग, नयी दिल्ली; शारदा शर्मा, *प्रवक्ता,* डी.आई.ई.टी., आर.के. पुरम, नयी दिल्ली की आभारी है।

परिषद् रचनाकारों, उनके परिजनों / संस्थानों / प्रकाशकों के प्रति आभारी है जिन्होंने उनकी रचनाओं को प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की।

पुस्तक निर्माण संबंधी कार्यों में तकनीकी सहयोग के लिए परिषद् *कंप्यूटर स्टेशन इंचार्ज* (भाषा विभाग) परशराम कौशिक; *डी.टी.पी. ऑपरेटर* सचिन कुमार; *कॉपी एडिटर* पूजा नेगी, मनोज मोहन एवं यतेन्द्र कुमार यादव की आभारी है।

© NCERT not to be republished

पाठ सूची

	आमुख		*v*
	भूमिका		*vii*

पद्य खंड

1.	**कबीर**	– साखी	3
2.	**मीरा**	– पद	8
3.	**बिहारी**	– दोहे	13
4.	**मैथिलीशरण गुप्त**	– मनुष्यता	18
5.	**सुमित्रानंदन पंत**	– पर्वत प्रदेश में पावस	25
6.	**महादेवी वर्मा**	– मधुर-मधुर मेरे दीपक जल	31
7.	**वीरेन डंगवाल**	– तोप	36
8.	**कैफ़ी आज़मी**	– कर चले हम फ़िदा	41
9.	**रवींद्रनाथ ठाकुर**	– आत्मत्राण	46

गद्य खंड

1.	**प्रेमचंद**	– बड़े भाई साहब	53
2.	**सीताराम सेकसरिया**	– डायरी का एक पन्ना	68

© NCERT not to be republished

3. लीलाधर मंडलोई	– तताँरा–वामीरो कथा	77
4. **प्रहलाद अग्रवाल**	– तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र	89
5. अंतोन चेखव	– गिरगिट	99
6. निदा फ़ाज़ली	– अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले	109
7. रवींद्र केलेकर	– पतझर में टूटी पत्तियाँ : 1. गिन्नी का सोना 2. झेन की देन	117
8. हबीब तनवीर	– कारतूस *(एकांकी)*	127

© NCERT not to be republished

पद्य खंड

एक राष्ट्रीय अस्मिता और राष्ट्रीय चरित्र का विकास भाषा के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा होता है। भाषा को कोई गढ़ता नहीं, वह तो हवा-पानी की तरह सहज भाव से बह सकती है।

अज्ञेय

© NCERT not to be republished

कबीर
(1398-1518)

कबीर का जन्म 1398 में काशी में हुआ माना जाता है। गुरु रामानंद के शिष्य कबीर ने 120 वर्ष की आयु पाई। जीवन के अंतिम कुछ वर्ष मगहर में बिताए और वहीं चिरनिद्रा में लीन हो गए।

कबीर का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ था जब राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक क्रांतियाँ अपने चरम पर थीं। कबीर क्रांतदर्शी कवि थे। उनकी कविता में गहरी सामाजिक चेतना प्रकट होती है। उनकी कविता सहज ही मर्म को छू लेती है। एक ओर धर्म के बाह्याडंबरों पर उन्होंने गहरी और तीखी चोट की है तो दूसरी ओर आत्मा-परमात्मा के विरह-मिलन के भावपूर्ण गीत गाए हैं। कबीर शास्त्रीय ज्ञान की अपेक्षा अनुभव ज्ञान को अधिक महत्त्व देते थे। उनका विश्वास सत्संग में था और वे मानते थे कि ईश्वर एक है, वह निर्विकार है, अरूप है।

कबीर की भाषा पूर्वी जनपद की भाषा थी। उन्होंने जनचेतना और जनभावनाओं को अपने सबद और साखियों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया।

© NCERT not to be republished

पाठ प्रवेश

'साखी' शब्द 'साक्षी' शब्द का ही तद्भव रूप है। साक्षी शब्द साक्ष्य से बना है जिसका अर्थ होता है—प्रत्यक्ष ज्ञान। यह प्रत्यक्ष ज्ञान गुरु शिष्य को प्रदान करता है। संत संप्रदाय में अनुभव ज्ञान की ही महत्ता है, शास्त्रीय ज्ञान की नहीं। कबीर का अनुभव क्षेत्र विस्तृत था। कबीर जगह-जगह भ्रमण कर प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करते थे। अतः उनके द्वारा रचित साखियों में अवधी, राजस्थानी, भोजपुरी और पंजाबी भाषाओं के शब्दों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। इसी कारण उनकी भाषा को 'पचमेल खिचड़ी' कहा जाता है। कबीर की भाषा को सधुक्कड़ी भी कहा जाता है।

'साखी' वस्तुतः दोहा छंद ही है जिसका लक्षण है 13 और 11 के विश्राम से 24 मात्रा। प्रस्तुत पाठ की साखियाँ प्रमाण हैं कि सत्य की साक्षी देता हुआ ही गुरु शिष्य को जीवन के तत्वज्ञान की शिक्षा देता है। यह शिक्षा जितनी प्रभावपूर्ण होती है उतनी ही याद रह जाने योग्य भी।

© NCERT not to be republished

साखी

ऐसी बाँणी बोलिये, मन का आपा खोइ।
अपना तन सीतल करै, औरन कौं सुख होइ।।

कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि।
ऐसैं घटि घटि राँम है, दुनियाँ देखै नाँहिं।।

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि।।

सुखिया सब संसार है, खायै अरू सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरू रोवै।।

बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।
राम बियोगी ना जिवै, जिवै तो बौरा होइ।।

निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ।
बिन साबण पाँणीं बिना, निरमल करै सुभाइ।।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।
ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ।।

हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि।।

संदर्भ : कबीर ग्रंथावली, बाबू श्यामसुंदर दास

© NCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?
2. दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।
3. ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते?
4. संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है? स्पष्ट कीजिए।
5. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है?
6. 'ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ'–इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?
7. कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए–

1. बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।
2. कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि।
3. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।
4. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।

भाषा अध्ययन

1. पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप उदाहरण के अनुसार लिखिए–

   उदाहरण– *जिवै* - *जीना*

   औरन, माँहि, देख्या, भुवंगम, नेड़ा, आँगणि, साबण, मुवा, पीव, जालौं, तास।

योग्यता विस्तार

1. 'साधु में निंदा सहन करने से विनयशीलता आती है' तथा 'व्यक्ति को मीठी व कल्याणकारी वाणी बोलनी चाहिए'–इन विषयों पर कक्षा में परिचर्चा आयोजित कीजिए।
2. कस्तूरी के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।

परियोजना कार्य

1. मीठी वाणी / बोली संबंधी व ईश्वर प्रेम संबंधी दोहों का संकलन कर चार्ट पर लिखकर भित्ति पत्रिका पर लगाइए।
2. कबीर की साखियों को याद कीजिए और कक्षा में अंत्याक्षरी में उनका प्रयोग कीजिए।

© NCERT not to be republished

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

बाँणी – बोली
आपा – अहं (अहंकार)
कुंडलि – नाभि
घटि घटि – घट-घट में / कण-कण में
भुवंगम – भुजंग / साँप
बौरा – पागल
नेड़ा – निकट
आँगणि – आँगन
साबण – साबुन
अषिर – अक्षर
पीव – प्रिय
मुराड़ा – जलती हुई लकड़ी

© NCERT not to be republished

मीरा
(1503-1546)

मीराबाई का जन्म जोधपुर के चोकड़ी (कुड़की) गाँव में 1503 में हुआ माना जाता है। 13 वर्ष की उम्र में मेवाड़ के महाराणा सांगा के कुँवर भोजराज से उनका विवाह हुआ। उनका जीवन दुखों की छाया में ही बीता। बाल्यावस्था में ही माँ का देहांत हो गया था। विवाह के कुछ ही साल बाद पहले पति, फिर पिता और एक युद्ध के दौरान श्वसुर का भी देहांत हो गया। भौतिक जीवन से निराश मीरा ने घर-परिवार त्याग दिया और वृंदावन में डेरा डाल पूरी तरह गिरधर गोपाल कृष्ण के प्रति समर्पित हो गईं।

मध्यकालीन भक्ति आंदोलन की आध्यात्मिक प्रेरणा ने जिन कवियों को जन्म दिया उनमें मीराबाई का विशिष्ट स्थान है। इनके पद पूरे उत्तर भारत सहित गुजरात, बिहार और बंगाल तक प्रचलित हैं। मीरा हिंदी और गुजराती दोनों की कवयित्री मानी जाती हैं।

संत रैदास की शिष्या मीरा की कुल सात-आठ कृतियाँ ही उपलब्ध हैं। मीरा की भक्ति दैन्य और माधुर्यभाव की है। इन पर योगियों, संतों और वैष्णव भक्तों का सम्मिलित प्रभाव पड़ा है। मीरा के पदों की भाषा में राजस्थानी, ब्रज और गुजराती का मिश्रण पाया जाता है। वहीं पंजाबी, खड़ी बोली और पूर्वी के प्रयोग भी मिल जाते हैं।

पाठ प्रवेश

कहते हैं पारिवारिक संतापों से मुक्ति पाने के लिए मीरा घर-द्वार छोड़कर वृंदावन में जा बसी थीं और कृष्णमय हो गई थीं। इनकी रचनाओं में इनके आराध्य कहीं निर्गुण निराकार ब्रह्म, कहीं सगुण साकार गोपीवल्लभ श्रीकृष्ण और कहीं निर्मोही परदेशी जोगी के रूप में संकल्पित किए गए हैं। वे गिरधर गोपाल के अनन्य और एकनिष्ठ प्रेम से अभिभूत हो उठी थीं।

प्रस्तुत पाठ में संकलित दोनों पद मीरा के इन्हीं आराध्य को संबोधित हैं। मीरा अपने आराध्य से मनुहार भी करती हैं, लाड़ भी लड़ाती हैं तो अवसर आने पर उलाहना देने से भी नहीं चूकतीं। उनकी क्षमताओं का गुणगान, स्मरण करती हैं तो उन्हें उनके कर्तव्य याद दिलाने में भी देर नहीं लगातीं।

© NCERT not to be republished

पद

(1)

हरि आप हरो जन री भीर।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रूप नरहरि, धर्‌यो आप सरीर।
बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर।
दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।।

(2)

स्याम म्हाने चाकर राखो जी,
गिरधारी लाला म्हाँने चाकर राखोजी।
चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ।
बिन्दरावन री कुंज गली में, गोविन्द लीला गास्यूँ।
चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बाताँ सरसी।
मोर मुगट पीताम्बर सौहे, गल वैजन्ती माला।
बिन्दरावन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला।
ऊँचा ऊँचा महल बणावं बिच बिच राखूँ बारी।
साँवरिया रा दरसण पास्यूँ, पहर कुसुम्बी साड़ी।
आधी रात प्रभु दरसण, दीज्यो जमनाजी रे तीरां।
मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर, हिवड़ो घणो अधीराँ।।

संदर्भ : मीराँ ग्रंथावली-2, कल्याण सिंह शेखावत

© NCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है?
2. दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं? स्पष्ट कीजिए।
3. मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है?
4. मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।
5. वे श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या कार्य करने को तैयार हैं?

(ख) निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए–

1. हरि आप हरो जन री भीर।
   द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
   भगत कारण रूप नरहरि, धर्‌यो आप सरीर।
2. बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर।
   दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।
3. चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची।
   भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बाताँ सरसी।

भाषा अध्ययन

1. उदाहरण के आधार पर पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए–

   उदाहरण–*भीर – पीड़ा / कष्ट / दुख; री – की*

चीर	....	बूढ़ता	....
धर्‌यो	....	लगास्यूँ	....
कुण्जर	....	घणा	....
बिन्दरावन	....	सरसी	....
रहस्यूँ	....	हिवड़ा	....
राखो	....	कुसुम्बी	....

योग्यता विस्तार

1. मीरा के अन्य पदों को याद करके कक्षा में सुनाइए।
2. यदि आपको मीरा के पदों के कैसेट मिल सकें तो अवसर मिलने पर उन्हें सुनिए।

परियोजना

1. मीरा के पदों का संकलन करके उन पदों को चार्ट पर लिखकर भित्ति पत्रिका पर लगाइए।
2. पहले हमारे यहाँ दस अवतार माने जाते थे। विष्णु के अवतार राम और कृष्ण प्रमुख हैं। अन्य अवतारों के बारे में जानकारी प्राप्त करके एक चार्ट बनाइए।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

बढ़ायो	–	बढ़ाना
गजराज	–	ऐरावत
कुंजर	–	हाथी
पास्यूँ	–	पाना
लीला	–	विविध रूप
सुमरण	–	याद करना / स्मरण
जागीरी	–	जागीर / साम्राज्य
पीतांबर	–	पीला वस्त्र
वैजंती	–	एक फूल
तीरां	–	किनारा
अधीराँ (अधीर)	–	व्याकुल होना
द्रोपदी री लाज राखी	–	दुर्योधन द्वारा द्रोपदी का चीरहरण कराने पर श्रीकृष्ण ने चीर को बढ़ाते-बढ़ाते इतना बढ़ा दिया कि दु:शासन का हाथ थक गया
काटी कुंजर पीर	–	कुंजर का कष्ट दूर करने के लिए मगरमच्छ को मारा

© NCERT not to be republished

बिहारी

(1595-1663)

बिहारी का जन्म 1595 में ग्वालियर में हुआ था। जब बिहारी सात-आठ साल के ही थे तभी इनके पिता ओरछा चले आए जहाँ बिहारी ने आचार्य केशवदास से काव्य शिक्षा पाई। यहीं बिहारी रहीम के संपर्क में आए। बिहारी ने अपने जीवन के कुछ वर्ष जयपुर में भी बिताए। बिहारी रसिक जीव थे पर इनकी रसिकता नागरिक जीवन की रसिकता थी। उनका स्वभाव विनोदी और व्यंग्यप्रिय था।

1663 में इनका देहावसान हुआ। बिहारी की एक ही रचना *'सतसई'* उपलब्ध है जिसमें उनके लगभग 700 दोहे संगृहीत हैं।

लोक ज्ञान और शास्त्र ज्ञान के साथ ही बिहारी का काव्य ज्ञान भी अच्छा था। रीति का उन्हें भरपूर ज्ञान था। इन्होंने अधिक वर्ण्य सामग्री श्रृंगार से ली है।

इनकी कविता श्रृंगार रस की है इसलिए नायक, नायिका या नायिकी की वे चेष्टाएँ जिन्हें हाव कहते हैं, इनमें पर्याप्त मात्रा में मिलती हैं। बिहारी की भाषा बहुत कुछ शुद्ध ब्रज है पर है वह साहित्यिक। इनकी भाषा में पूर्वी प्रयोग भी मिलते हैं। बुंदेलखंड में अधिक दिनों तक रहने के कारण बुंदेलखंडी शब्दों का प्रयोग मिलना भी स्वाभाविक है।

© NCERT not to be republished

पाठ प्रवेश

मांजी, पौंछी, चमकाइ, युत–प्रतिभा जतन अनेक।
दीरघ जीवन, विविध सुख, रची 'सतसई' एक।।

बिहारी ने केवल एक ही ग्रंथ की रचना की–'बिहारी सतसई'। इस ग्रंथ में लगभग सात सौ दोहे हैं।

दोहा जैसे छोटे से छंद में गहरी अर्थव्यंजना के कारण कहा जाता है कि बिहारी गागर में सागर भरने में निपुण थे। उनके दोहों के अर्थगांभीर्य को देखकर कहा जाता है–

सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगै, घाव करें गंभीर।।

बिहारी की ब्रजभाषा मानक ब्रजभाषा है। सतसई में मुख्यत: प्रेम और भक्ति के सारगर्भित दोहे हैं। इसमें अनेक दोहे नीति संबंधी हैं। यहाँ सतसई के कुछ दोहे दिए जा रहे हैं।

बिहारी मुख्य रूप से शृंगारपरक दोहों के लिए जाने जाते हैं, किंतु उन्होंने लोक–व्यवहार, नीति ज्ञान आदि विषयों पर भी लिखा है। संकलित दोहों में सभी प्रकार की छटाएँ हैं। इन दोहों से आपको ज्ञात होगा कि बिहारी कम–से–कम शब्दों में अधिक–से–अधिक अर्थ भरने की कला में निपुण हैं।

© NCERT not to be republished

दोहे

सोहत ओढ़ैं पीतु पटु स्याम, सलौनैं गात।
मनौ नीलमनि-सैल पर आतपु पर्‍यौ प्रभात।।

कहलाने एकत बसत अहि मयूर, मृग बाघ।
जगतु तपोबन सौ कियौ दीरघ-दाघ निदाघ।।

बतरस-लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करैं भौंहनु हँसै, दैन कहैं नटि जाइ।।

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं नैननु हीं सब बात।।

बैठि रही अति सघन बन, पैठि सदन-तन माँह।
देखि दुपहरी जेठ की छाँहौं चाहति छाँह।।

कागद पर लिखत न बनत, कहत सँदेसु लजात।
कहिहै सबु तेरौ हियौ, मेरे हिय की बात।।

प्रगट भए द्विजराज-कुल, सुबस बसे ब्रज आइ।
मेरे हरौ कलेस सब, केसव केसवराइ।।

जपमाला, छापैं, तिलक सरै न एकौ कामु।
मन-काँचै नाचै बृथा, साँचै राँचै रामु।।

संदर्भ : बिहारी रत्नाकर, जगन्नाथदास रत्नाकर

© NCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. छाया भी कब छाया ढूँढ़ने लगती है?
2. बिहारी की नायिका यह क्यों कहती है 'कहिहै सबु तेरौ हियौ, मेरे हिय की बात'–स्पष्ट कीजिए।
3. सच्चे मन में राम बसते हैं–दोहे के संदर्भानुसार स्पष्ट कीजिए।
4. गोपियाँ श्रीकृष्ण की बाँसुरी क्यों छिपा लेती हैं?
5. बिहारी कवि ने सभी की उपस्थिति में भी कैसे बात की जा सकती है, इसका वर्णन किस प्रकार किया है? अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए–

1. मनौ नीलमनि-सैल पर आतपु पर्‌यौ प्रभात।
2. जगतु तपोबन सौ कियौ दीरघ-दाघ निदाघ।
3. जपमाला, छापैं, तिलक सरै न एकौ कामु।
   मन-काँचै नाचै बृथा, साँचै राँचै रामु।।

योग्यता विस्तार

1. सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
   देखन में छोटे लगै, घाव करें गंभीर।।

अध्यापक की मदद से बिहारी विषयक इस दोहे को समझने का प्रयास करें। इस दोहे से बिहारी की भाषा संबंधी किस विशेषता का पता चलता है?

परियोजना कार्य

1. बिहारी कवि के विषय में जानकारी एकत्रित कीजिए और परियोजना पुस्तिका में लगाइए।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

सोहत – अच्छा लगना
पीतु – पीला
पटु – कपड़ा
नीलमनि-सैल – नीलमणि का पर्वत
आतपु – धूप
अहि – साँप
तपोबन – वह वन जहाँ तपस्वी रहते हैं

© NCERT not to be republished

दीरघ-दाघ – प्रचंड ताप / भयंकर गरमी
निदाघ – ग्रीष्म ऋतु
बतरस – बतियाने का सुख / बातचीत का आनंद
लुकाइ – छुपाना
सौंह – शपथ
भौंहनु – भौंह से
नटि – मना करना / मुकर जाना
रीझत – मोहित होना
खिझत – खीझना / बनावटी गुस्सा दिखाना
मिलत – मिलना
भौन – भवन
सघन – घना
पैठि – घुसना
सदन-तन – भवन में
कागद – कागज़
सँदेसु – संदेश
हिय – हृदय
द्विजराज – (1) चंद्रमा (2) ब्राह्मण
सुबस – अपनी इच्छा से
केसव – श्रीकृष्ण
केसवराइ – बिहारी कवि के पिता
जपमाला – जपने की माला
छापैं – छापा
मन-काँचै – कच्चा मन / बिना सच्ची भक्ति वाला
साँचै – सच्ची भक्ति वाला

© NCERT not to be republished

मैथिलीशरण गुप्त

(1886-1964)

1886 में झाँसी के करीब चिरगाँव में जन्मे मैथिलीशरण गुप्त अपने जीवनकाल में ही राष्ट्रकवि के रूप में विख्यात हुए। इनकी शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। संस्कृत, बांग्ला, मराठी और अंग्रेज़ी पर इनका समान अधिकार था।

गुप्त जी रामभक्त कवि हैं। राम का कीर्तिगान इनकी चिरसंचित अभिलाषा रही। इन्होंने भारतीय जीवन को समग्रता में समझने और प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया।

गुप्त जी की कविता की भाषा विशुद्ध खड़ी बोली है। भाषा पर संस्कृत का प्रभाव है। काव्य की कथावस्तु भारतीय इतिहास के ऐसे अंशों से ली गई है जो भारत के अतीत का स्वर्ण चित्र पाठक के सामने उपस्थित करते हैं।

गुप्त जी की प्रमुख कृतियाँ हैं–*साकेत, यशोधरा, जयद्रथ वध।*

गुप्त जी के पिता सेठ रामचरण दास भी कवि थे और इनके छोटे भाई सियारामशरण गुप्त भी प्रसिद्ध कवि हुए।

पाठ प्रवेश

प्रकृति के अन्य प्राणियों की तुलना में मनुष्य में चेतना–शक्ति की प्रबलता होती ही है। वह अपने ही नहीं औरों के हिताहित का भी खयाल रखने में, औरों के लिए भी कुछ कर सकने में समर्थ होता है। पशु चरागाह में जाते हैं, अपने–अपने हिस्से का चर आते हैं, पर मनुष्य ऐसा नहीं करता। वह जो कमाता है, जो भी कुछ उत्पादित करता है, वह औरों के लिए भी करता है, औरों के सहयोग से करता है।

प्रस्तुत पाठ का कवि अपनों के लिए जीने–मरने वालों को मनुष्य तो मानता है लेकिन यह मानने को तैयार नहीं है कि ऐसे मनुष्यों में मनुष्यता के पूरे–पूरे लक्षण भी हैं। वह तो उन मनुष्यों को ही महान मानेगा जिनमें अपने और अपनों के हित चिंतन से कहीं पहले और सर्वोपरि दूसरों का हित चिंतन हो। उसमें वे गुण हों जिनके कारण कोई मनुष्य इस मृत्युलोक से गमन कर जाने के बावजूद युगों तक औरों की यादों में भी बना रह पाता है। उसकी मृत्यु भी सुमृत्यु हो जाती है। आखिर क्या हैं वे गुण?

© NCERT not to be republished

मनुष्यता

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
वही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती;
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।

© NCERT not to be republished

विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?
अहा! वही उदार है परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।
अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।
रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

'मनुष्य मात्र बंधु है' यही बड़ा विवेक है,
पुराणपुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।
फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,
परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।
अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

© NCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. कवि ने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है?
2. उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?
3. कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर 'मनुष्यता' के लिए क्या संदेश दिया है?
4. कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्व-रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?
5. 'मनुष्य मात्र बंधु है' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।
6. कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है?
7. व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए? इस कविता के आधार पर लिखिए।
8. 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए–

1. सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;
   वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
   विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
   विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?
2. रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
   सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
   अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
   दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।
3. चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
   विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
   घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
   अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।

योग्यता विस्तार

1. अपने अध्यापक की सहायता से रंतिदेव, दधीचि, कर्ण आदि पौराणिक पात्रों के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।
2. 'परोपकार' विषय पर आधारित दो कविताओं और दो दोहों का संकलन कीजिए। उन्हें कक्षा में सुनाइए।

© NCERT not to be republished

परियोजना कार्य

1. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की कविता 'कर्मवीर' तथा अन्य कविताओं को पढ़िए तथा कक्षा में सुनाइए।
2. भवानी प्रसाद मिश्र की 'प्राणी वही प्राणी है' कविता पढ़िए तथा दोनों कविताओं के भावों में व्यक्त हुई समानता को लिखिए।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

मर्त्य	–	मरणशील
पशु-प्रवृत्ति	–	पशु जैसा स्वभाव
उदार	–	दानशील / सहृदय
कृतार्थ	–	आभारी / धन्य
कीर्ति	–	यश
कूजती	–	मधुर ध्वनि करती
क्षुधार्त	–	भूख से व्याकुल
रंतिदेव	–	एक परम दानी राजा
करस्थ	–	हाथ में पकड़ा हुआ / लिया हुआ
दधीचि	–	एक प्रसिद्ध ऋषि जिनकी हड्डियों से इंद्र का वज्र बना था
परार्थ	–	जो दूसरों के लिए हो
अस्थिजाल	–	हड्डियों का समूह
उशीनर	–	गंधार देश का राजा
क्षितीश	–	राजा
स्वमांस	–	अपने शरीर का मांस
कर्ण	–	दान देने के लिए प्रसिद्ध कुंती पुत्र
महाविभूति	–	बड़ी भारी पूँजी
वशीकृता	–	वश में की हुई
विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा	–	बुद्ध ने करुणावश उस समय की पारंपरिक मान्यताओं का विरोध किया था
मदांध	–	जो गर्व से अंधा हो
वित्त	–	धन-संपत्ति
परस्परावलंब	–	एक-दूसरे का सहारा
अमर्त्य-अंक	–	देवता की गोद
अपंक	–	कलंक-रहित
स्वयंभू	–	परमात्मा / स्वयं उत्पन्न होने वाला

© NCERT not to be republished

अंतरैक्य – आत्मा की एकता / अंत:करण की एकता

प्रमाणभूत – साक्षी

अभीष्ट – इच्छित

अतर्क – तर्क से परे

सतर्क पंथ – सावधान यात्री

© NCERT not to be republished

सुमित्रानंदन पंत
(1900-1977)

20 मई 1900 को उत्तराखंड के कौसानी-अलमोड़ा में जन्मे सुमित्रानंदन पंत ने बचपन से ही कविता लिखना शुरू कर दिया था। सात साल की उम्र में स्कूल में काव्य पाठ के लिए पुरस्कृत हुए। 1915 में स्थायी रूप से साहित्य सृजन शुरू किया और छायावाद के प्रमुख स्तंभ के रूप में जाने गए।

पंत जी की आरंभिक कविताओं में प्रकृति प्रेम और रहस्यवाद झलकता है। इसके बाद वे मार्क्स और महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित हुए। इनकी बाद की कविताओं में अरविंद दर्शन का प्रभाव स्पष्ट नज़र आता है।

जीविका के क्षेत्र में पंत जी उदयशंकर संस्कृति केंद्र से जुड़े। आकाशवाणी के परामर्शदाता रहे। लोकायतन सांस्कृतिक संस्था की स्थापना की। 1961 में भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण सम्मान से अलंकृत किया। हिंदी के पहले ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता हुए।

पंत जी को *कला और बूढ़ा चाँद* कविता संग्रह पर 1960 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार, 1969 में *चिदंबरा* संग्रह पर ज्ञानपीठ पुरस्कार सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उनका निधन 28 दिसंबर 1977 को हुआ।

इनकी अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं–*वीणा, पल्लव, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्णकिरण* और *लोकायतन।*

© NCERT not to be republished

पाठ प्रवेश

भला कौन होगा जिसका मन पहाड़ों पर जाने को न मचलता हो। जिन्हें सुदूर हिमालय तक जाने का अवसर नहीं मिलता वे भी अपने आसपास के पर्वत प्रदेश में जाने का अवसर शायद ही हाथ से जाने देते हों। ऐसे में कोई कवि और उसकी कविता अगर कक्षा में बैठे-बैठे ही वह अनुभूति दे जाए जैसे वह अभी-अभी पर्वतीय अंचल में विचरण करके लौटा हो, तो!

प्रस्तुत कविता ऐसे ही रोमांच और प्रकृति के सौंदर्य को अपनी आँखों निरखने की अनुभूति देती है। यही नहीं, सुमित्रानंदन पंत की अधिकांश कविताएँ पढ़ते हुए यही अनुभूति होती है कि मानो हमारे आसपास की सभी दीवारें कहीं विलीन हो गई हों। हम किसी ऐसे रम्य स्थल पर आ पहुँचे हैं जहाँ पहाड़ों की अपार शृंखला है, आसपास झरने बह रहे हैं और सब कुछ भूलकर हम उसी में लीन रहना चाहते हैं।

महाप्राण निराला ने भी कहा था : पंत जी में सबसे ज़बरदस्त कौशल जो है, वह है 'शेली' (shelley) की तरह अपने विषय को अनेक उपमाओं से सँवारकर मधुर से मधुर और कोमल से कोमल कर देना।

© NCERT not to be republished

पर्वत प्रदेश में पावस

पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश,
पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश।

मेखलाकार पर्वत अपार
अपने सहस्र दृग-सुमन फाड़,
अवलोक रहा है बार-बार
नीचे जल में निज महाकार,

-जिसके चरणों में पला ताल
दर्पण-सा फैला है विशाल!

गिरि का गौरव गाकर झर-झर
मद में नस-नस उत्तेजित कर
मोती की लड़ियों-से सुंदर
झरते हैं झाग भरे निर्झर!
गिरिवर के उर से उठ-उठ कर
उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
हैं झाँक रहे नीरव नभ पर
अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।

उड़ गया, अचानक लो, भूधर
फड़का अपार पारद* के पर!

पाठांतर : वारिद

© NCERT not to be republished

रव-शेष रह गए हैं निर्झर!
है टूट पड़ा भू पर अंबर!

धँस गए धरा में सभय शाल!
उठ रहा धुआँ, जल गया ताल!
—यों जलद-यान में विचर-विचर
था इंद्र खेलता इंद्रजाल।

प्रश्न-अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. पावस ऋतु में प्रकृति में कौन-कौन से परिवर्तन आते हैं? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
2. 'मेखलाकार' शब्द का क्या अर्थ है? कवि ने इस शब्द का प्रयोग यहाँ क्यों किया है?
3. 'सहस्र दृग-सुमन' से क्या तात्पर्य है? कवि ने इस पद का प्रयोग किसके लिए किया होगा?
4. कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों?
5. पर्वत के हृदय से उठकर ऊँचे-ऊँचे वृक्ष आकाश की ओर क्यों देख रहे थे और वे किस बात को प्रतिबिंबित करते हैं?
6. शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में क्यों धँस गए?
7. झरने किसके गौरव का गान कर रहे हैं? बहते हुए झरने की तुलना किससे की गई है?

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए—

1. है टूट पड़ा भू पर अंबर।
2. —यों जलद-यान में विचर-विचर
   था इंद्र खेलता इंद्रजाल।
3. गिरिवर के उर से उठ-उठ कर
   उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
   हैं झाँक रहे नीरव नभ पर
   अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।

© NCERT not to be republished

कविता का सौंदर्य

1. इस कविता में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किस प्रकार किया गया है? स्पष्ट कीजिए।
2. आपकी दृष्टि में इस कविता का सौंदर्य इनमें से किस पर निर्भर करता है–
   (क) अनेक शब्दों की आवृत्ति पर।
   (ख) शब्दों की चित्रमयी भाषा पर।
   (ग) कविता की संगीतात्मकता पर।
3. कवि ने चित्रात्मक शैली का प्रयोग करते हुए पावस ऋतु का सजीव चित्र अंकित किया है। ऐसे स्थलों को छाँटकर लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. इस कविता में वर्षा ऋतु में होने वाले प्राकृतिक परिवर्तनों की बात कही गई है। आप अपने यहाँ वर्षा ऋतु में होने वाले प्राकृतिक परिवर्तनों के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।

परियोजना कार्य

1. वर्षा ऋतु पर लिखी गई अन्य कवियों की कविताओं का संग्रह कीजिए और कक्षा में सुनाइए।
2. बारिश, झरने, इंद्रधनुष, बादल, कोयल, पानी, पक्षी, सूरज, हरियाली, फूल, फल आदि या कोई भी प्रकृति विषयक शब्द का प्रयोग करते हुए एक कविता लिखने का प्रयास कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

पावस	–	वर्षा ऋतु
प्रकृति-वेश	–	प्रकृति का रूप
मेखलाकार	–	करघनी के आकार की पहाड़ की ढाल
सहस्र	–	हज़ार
दृग-सुमन	–	पुष्प रूपी आँखें
अवलोक	–	देखना
महाकार	–	विशाल आकार
दर्पण	–	आईना
मद	–	मस्ती
झाग	–	फेन
उर	–	हृदय
उच्चाकांक्षा	–	ऊँचा उठने की कामना
तरुवर	–	पेड़
नीरव नभ	–	शांत आकाश
अनिमेष	–	एकटक

© NCERT not to be republished

चिंतापर – चिंतित / चिंता में डूबा हुआ
भूधर – पहाड़
पारद के पर – पारे के समान धवल एवं चमकीले पंख
रव-शेष – केवल आवाज़ का रह जाना / चारों ओर शांत, निस्तब्ध वातावरण में केवल पानी के गिरने की आवाज़ का रह जाना
सभय – भय के साथ
शाल – एक वृक्ष का नाम
ताल – तालाब
जलद-यान – बादल रूपी विमान
विचर – घूमना
इंद्रजाल – जादूगरी

© NCERT not to be republished

महादेवी वर्मा

(1907-1987)

1907 की होली के दिन उत्तर प्रदेश के फर्रूखाबाद में जन्मीं महादेवी वर्मा की प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में हुई। विवाह के बाद पढ़ाई कुछ अंतराल से फिर शुरू की। वे मिडिल में पूरे प्रांत में प्रथम आईं और छात्रवृत्ति भी पाई। यह सिलसिला कई कक्षाओं तक चला। बौद्ध भिक्षुणी बनना चाहा लेकिन महात्मा गांधी के आह्वान पर सामाजिक कार्यों में जुट गईं। उच्च शिक्षा के लिए विदेश न जाकर नारी शिक्षा प्रसार में जुट गईं। स्वतंत्रता आंदोलन में भी भाग लिया।

महादेवी ने छायावाद के चार प्रमुख रचनाकारों में औरों से भिन्न अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया। महादेवी का समस्त काव्य वेदनामय है। इनकी कविता का स्वर सबसे भिन्न और विशिष्ट तो था ही सर्वथा अपरिचित भी था। इन्होंने साहित्य को बेजोड़ गद्य रचनाओं से भी समृद्ध किया है।

11 सितंबर 1987 को उनका देहावसान हुआ। उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार सहित प्रायः सभी प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने 1956 में उन्हें पद्मभूषण अलंकरण से अलंकृत किया था।

कुल आठ वर्ष की उम्र में *बारहमासा* जैसी बेजोड़ कविता लिखने वाली महादेवी की प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं–*नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, प्रथम आयाम, अग्निरेखा, यामा* और गद्य रचनाएँ हैं–*अतीत के चलचित्र, शृंखला की कड़ियाँ, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, मेरा परिवार* और *चिंतन के क्षण*। महादेवी की रुचि चित्रकला में भी रही। उनके बनाए चित्र उनकी कई कृतियों में प्रयुक्त किए गए हैं।

© NCERT not to be republished

पाठ प्रवेश

औरों से बतियाना, औरों को समझाना, औरों को राह सुझाना तो सब करते ही हैं, कोई सरलता से कर लेता है, कोई थोड़ी कठिनाई उठाकर, कोई थोड़ी झिझक-संकोच के बाद तो कोई किसी तीसरे की आड़ लेकर। लेकिन इससे कहीं ज़्यादा कठिन और ज़्यादा श्रमसाध्य होता है अपने आप को समझाना। अपने आप से बतियाना, अपने आप को सही राह पर बनाए रखने के लिए तैयार करना। अपने आप को आगाह करना, सचेत करना और सदा चैतन्य बनाए रखना।

प्रस्तुत पाठ में कवयित्री अपने आप से जो अपेक्षाएँ करती हैं, यदि वे पूरी हो जाएँ तो न सिर्फ़ उसका अपना, बल्कि हम सभी का कितना भला हो सकता है। चूँकि, अलग-अलग शरीरधारी होते हुए भी हम हैं तो प्रकृति की मनुष्य नामक एक ही निर्मिति।

© NCERT not to be republished

मधुर मधुर मेरे दीपक जल!

मधुर मधुर मेरे दीपक जल!
युग युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,
प्रियतम का पथ आलोकित कर!

सौरभ फैला विपुल धूप बन,
मृदुल मोम सा घुल रे मृदु तन;
दे प्रकाश का सिंधु अपरिमित,
तेरे जीवन का अणु गल गल!
पुलक पुलक मेरे दीपक जल!

सारे शीतल कोमल नूतन,
माँग रहे तुझसे ज्वाला-कण
विश्व-शलभ सिर धुन कहता 'मैं
हाय न जल पाया तुझ में मिल'!
सिहर सिहर मेरे दीपक जल!

जलते नभ में देख असंख्यक,
स्नेहहीन नित कितने दीपक;
जलमय सागर का उर जलता,
विद्युत ले घिरता है बादल!
विहँस विहँस मेरे दीपक जल!

© NCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. प्रस्तुत कविता में 'दीपक' और 'प्रियतम' किसके प्रतीक हैं?
2. दीपक से किस बात का आग्रह किया जा रहा है और क्यों?
3. 'विश्व-शलभ' दीपक के साथ क्यों जल जाना चाहता है?
4. आपकी दृष्टि में 'मधुर मधुर मेरे दीपक जल' कविता का सौंदर्य इनमें से किस पर निर्भर है–

   (क) शब्दों की आवृत्ति पर।

   (ख) सफल बिंब अंकन पर।
5. कवयित्री किसका पथ आलोकित करना चाह रही हैं?
6. कवयित्री को आकाश के तारे स्नेहहीन से क्यों प्रतीत हो रहे हैं?
7. पतंगा अपने क्षोभ को किस प्रकार व्यक्त कर रहा है?
8. कवयित्री ने दीपक को हर बार अलग-अलग तरह से 'मधुर मधुर, पुलक-पुलक, सिहर-सिहर और विहँस-विहँस' जलने को क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।
9. नीचे दी गई काव्य-पंक्तियों को पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

   जलते नभ में देख असंख्यक,

   स्नेहहीन नित कितने दीपक;

   जलमय सागर का उर जलता,

   विद्युत ले घिरता है बादल!

   विहँस विहँस मेरे दीपक जल!

   (क) 'स्नेहहीन दीपक' से क्या तात्पर्य है?

   (ख) सागर को 'जलमय' कहने का क्या अभिप्राय है और उसका हृदय क्यों जलता है?

   (ग) बादलों की क्या विशेषता बताई गई है?

   (घ) कवयित्री दीपक को 'विहँस विहँस' जलने के लिए क्यों कह रही हैं?
10. क्या मीराबाई और 'आधुनिक मीरा' महादेवी वर्मा इन दोनों ने अपने-अपने आराध्य देव से मिलने के लिए जो युक्तियाँ अपनाई हैं, उनमें आपको कुछ समानता या अंतर प्रतीत होता है? अपने विचार प्रकट कीजिए।

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए–

1. दे प्रकाश का सिंधु अपरिमित,

   तेरे जीवन का अणु गल गल!

© NCERT not to be republished

2. युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,
   प्रियतम का पथ आलोकित कर!
3. मृदुल मोम सा घुल रे मृदु तन!

भाषा अध्ययन

1. कविता में जब एक शब्द बार-बार आता है और वह योजक चिह्न द्वारा जुड़ा होता है, तो वहाँ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार होता है; जैसे–पुलक-पुलक। इसी प्रकार के कुछ और शब्द खोजिए जिनमें यह अलंकार हो।

योग्यता विस्तार

1. इस कविता में जो भाव आए हैं, उन्हीं भावों पर आधारित कवयित्री द्वारा रचित कुछ अन्य कविताओं का अध्ययन करें; जैसे–
   (क) मैं नीर भरी दुख की बदली
   (ख) जो तुम आ जाते एकबार
   ये सभी कविताएँ 'सन्धिनी' में संकलित हैं।
2. इस कविता को कंठस्थ करें तथा कक्षा में संगीतमय प्रस्तुति करें।
3. महादेवी वर्मा को आधुनिक मीरा कहा जाता है। इस विषय पर जानकारी प्राप्त कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

सौरभ	–	सुगंध
विपुल	–	विस्तृत
मृदुल	–	कोमल
अपरिमित	–	असीमित / अपार
पुलक	–	रोमांच
ज्वाला-कण	–	आग की लपट / आग का लघुतम अंश
शलभ	–	फतिंगा / पतंगा
सिर धुनना	–	पछताना
सिहरना	–	काँपना / थरथराना
स्नेहहीन	–	तेल / प्रेम से हीन
उर	–	हृदय
विद्युत	–	बिजली

© NCERT not to be republished

वीरेन डंगवाल

(1947 – 2015)

5 अगस्त 1947 को उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल ज़िले के कीर्तिनगर में जन्मे वीरेन डंगवाल ने आरंभिक शिक्षा नैनीताल में और उच्च शिक्षा इलाहाबाद में पाई। पेशे से प्राध्यापक डंगवाल पत्रकारिता से भी जुड़े हुए हैं।

समाज के साधारण जन और हाशिए पर स्थित जीवन के विलक्षण ब्योरे और दृश्य वीरेन की कविताओं की विशिष्टता मानी जाती है। इन्होंने ऐसी बहुत–सी चीज़ों और जीव–जंतुओं को अपनी कविता का आधार बनाया है जिन्हें हम देखकर भी अनदेखा किए रहते हैं।

वीरेन के अब तक दो कविता संग्रह *इसी दुनिया में* और *दुष्चक्र में स्रष्टा* प्रकाशित हो चुके हैं। पहले संग्रह पर प्रतिष्ठित श्रीकांत वर्मा पुरस्कार और दूसरे पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार के अलावा इन्हें अन्य कई पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। वीरेन डंगवाल ने कई महत्त्वपूर्ण कवियों की अन्य भाषाओं में लिखी गई कविताओं का हिंदी में अनुवाद भी किया है। 28 सितंबर 2015 को इनका देहावसान हुआ।

© NCERT not to be republished

पाठ प्रवेश

प्रतीक और धरोहर दो किस्म की हुआ करती हैं। एक वे जिन्हें देखकर या जिनके बारे में जानकर हमें अपने देश और समाज की प्राचीन उपलब्धियों का भान होता है और दूसरी वे जो हमें बताती हैं कि हमारे पूर्वजों से कब, क्या चूक हुई थी, जिसके परिणामस्वरूप देश की कई पीढ़ियों को दारुण दुख और दमन झेलना पड़ा था।

प्रस्तुत पाठ में ऐसे ही दो प्रतीकों का चित्रण है। पाठ हमें याद दिलाता है कि कभी ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में व्यापार करने के इरादे से आई थी। भारत ने उसका स्वागत ही किया था, लेकिन करते-कराते वह हमारी शासक बन बैठी। उसने कुछ बाग बनवाए तो कुछ तोपें भी तैयार कीं। उन तोपों ने इस देश को फिर से आज़ाद कराने का सपना साकार करने निकले जाँबाज़ों को मौत के घाट उतारा। पर एक दिन ऐसा भी आया जब हमारे पूर्वजों ने उस सत्ता को उखाड़ फेंका। तोप को निस्तेज कर दिया। फिर भी हमें इन प्रतीकों के बहाने यह याद रखना होगा कि भविष्य में कोई और ऐसी कंपनी यहाँ पाँव न जमाने पाए जिसके इरादे नेक न हों और यहाँ फिर वही तांडव मचे जिसके घाव अभी तक हमारे दिलों में हरे हैं। भले ही अंत में उनकी तोप भी उसी काम क्यों न आए जिस काम में इस पाठ की तोप आ रही है...

© NCERT not to be republished

तोप

कंपनी बाग के मुहाने पर
धर रखी गई है यह 1857 की तोप
इसकी होती है बड़ी सम्हाल, विरासत में मिले
कंपनी बाग की तरह
साल में चमकाई जाती है दो बार।

सुबह-शाम कंपनी बाग में आते हैं बहुत से सैलानी
उन्हें बताती है यह तोप
कि मैं बड़ी जबर
उड़ा दिए थे मैंने
अच्छे-अच्छे सूरमाओं के धज्जे
अपने ज़माने में

अब तो बहरहाल
छोटे लड़कों की घुड़सवारी से अगर यह फ़ारिग हो
तो उसके ऊपर बैठकर
चिड़ियाँ ही अकसर करती हैं गपशप
कभी-कभी शैतानी में वे इसके भीतर भी घुस जाती हैं
खास कर गौरैयें

वे बताती हैं कि दरअसल कितनी भी बड़ी हो तोप
एक दिन तो होना ही है उसका मुँह बंद।

© NCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. विरासत में मिली चीज़ों की बड़ी सँभाल क्यों होती है? स्पष्ट कीजिए।
2. इस कविता से आपको तोप के विषय में क्या जानकारी मिलती है?
3. कंपनी बाग में रखी तोप क्या सीख देती है?
4. कविता में तोप को दो बार चमकाने की बात की गई है। ये दो अवसर कौन-से होंगे?

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए–

1. अब तो बहरहाल
छोटे लड़कों की घुड़सवारी से अगर यह फ़ारिग हो
तो उसके ऊपर बैठकर
चिड़ियाँ ही अकसर करती हैं गपशप।
2. वे बताती हैं कि दरअसल कितनी भी बड़ी हो तोप
एक दिन तो होना ही है उसका मुँह बंद।
3. उड़ा दिए थे मैंने
अच्छे-अच्छे सूरमाओं के धज्जे।

भाषा अध्ययन

1. कवि ने इस कविता में शब्दों का सटीक और बेहतरीन प्रयोग किया है। इसकी एक पंक्ति देखिए 'धर रखी गई है यह 1857 की तोप'। 'धर' शब्द देशज है और कवि ने इसका कई अर्थों में प्रयोग किया है। 'रखना', 'धरोहर' और 'संचय' के रूप में।
2. 'तोप' शीर्षक कविता का भाव समझते हुए इसका गद्य में रूपांतरण कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. कविता रचना करते समय उपयुक्त शब्दों का चयन और उनका सही स्थान पर प्रयोग अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। कविता लिखने का प्रयास कीजिए और इसे समझिए।
2. तेज़ी से बढ़ती जनसंख्या और घनी आबादी वाली जगहों के आसपास पार्कों का होना क्यों ज़रूरी है? कक्षा में परिचर्चा कीजिए।

परियोजना कार्य

1. स्वतंत्रता सैनानियों की गाथा संबंधी पुस्तक को पुस्तकालय से प्राप्त कीजिए और पढ़कर कक्षा में सुनाइए।

© NCERT not to be republished

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

मुहाने	–	प्रवेश द्वार पर
धर रखी	–	रखी गई
सम्हाल	–	देखभाल
विरासत	–	पूर्व पीढ़ियों से प्राप्त वस्तुएँ
सैलानी	–	दर्शनीय स्थलों पर आने वाले यात्री
सूरमा(ओं)	–	वीर
धज्जे	–	चिथड़े-चिथड़े करना
फ़ारिग	–	मुक्त / खाली
कंपनी बाग	–	गुलाम भारत में 'ईस्ट इंडिया कंपनी' द्वारा जगह-जगह पर बनवाए गए बाग-बगीचों में से कानपुर में बनवाया गया एक बाग

© NCERT not to be republished

कैफ़ी आज़मी

(1919-2002)

अतहर हुसैन रिज़वी का जन्म 19 जनवरी 1919 को उत्तर प्रदेश के आज़मगढ़ ज़िले में मजमां गाँव में हुआ। अदब की दुनिया में आगे चलकर वे कैफ़ी आज़मी नाम से मशहूर हुए। कैफ़ी आज़मी की गणना प्रगतिशील उर्दू कवियों की पहली पंक्ति में की जाती है।

कैफ़ी की कविताओं में एक ओर सामाजिक और राजनैतिक जागरूकता का समावेश है तो दूसरी ओर हृदय की कोमलता भी है। अपनी युवावस्था में मुशायरों में वाह-वाही पाने वाले कैफ़ी आज़मी ने फ़िल्मों के लिए सैकड़ों बेहतरीन गीत भी लिखे हैं।

10 मई 2002 को इस दुनिया से रुखसत हुए कैफ़ी के पाँच कविता संग्रह *झंकार, आखिर-ए-शब, आवारा सज़दे, सरमाया* और फ़िल्मी गीतों का संग्रह *मेरी आवाज़ सुनो* प्रकाशित हुए। अपने रचनाकर्म के लिए कैफ़ी को साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित कई पुरस्कारों से नवाजा गया। कैफ़ी कलाकारों के परिवार से थे। इनके तीनों बड़े भाई भी शायर थे। पत्नी शौकत आज़मी, बेटी शबाना आज़मी मशहूर अभिनेत्रियाँ हैं।

पाठ प्रवेश

ज़िंदगी प्राणीमात्र को प्रिय होती है। कोई भी इसे यूँ ही खोना नहीं चाहता। असाध्य रोगी तक जीवन की कामना करता है। जीवन की रक्षा, सुरक्षा और उसे जिलाए रखने के लिए प्रकृति ने न केवल तमाम साधन ही उपलब्ध कराए हैं, सभी जीव-जंतुओं में उसे बनाए, बचाए रखने की भावना भी पिरोई है। इसीलिए शांतिप्रिय जीव भी अपने प्राणों पर संकट आया जान उसकी रक्षा हेतु मुकाबले के लिए तत्पर हो जाते हैं।

लेकिन इससे ठीक विपरीत होता है सैनिक का जीवन, जो अपने नहीं, जब औरों के जीवन पर, उनकी आज़ादी पर आ बनती है, तब मुकाबले के लिए अपना सीना तान कर खड़ा हो जाता है। यह जानते हुए भी कि उस मुकाबले में औरों की ज़िंदगी और आज़ादी भले ही बची रहे, उसकी अपनी मौत की संभावना सबसे अधिक होती है।

प्रस्तुत पाठ जो युद्ध की पृष्ठभूमि पर बनी फ़िल्म 'हकीकत' के लिए लिखा गया था, ऐसे ही सैनिकों के हृदय की आवाज़ बयान करता है, जिन्हें अपने किए-धरे पर नाज़ है। इसी के साथ इन्हें अपने देशवासियों से कुछ अपेक्षाएँ भी हैं। चूँकि जिनसे उन्हें वे अपेक्षाएँ हैं वे देशवासी और कोई नहीं, हम और आप ही हैं, इसलिए आइए, इसे पढ़कर अपने आप से पूछें कि हम उनकी अपेक्षाएँ पूरी कर रहे हैं या नहीं?

© NCERT not to be republished

कर चले हम फ़िदा

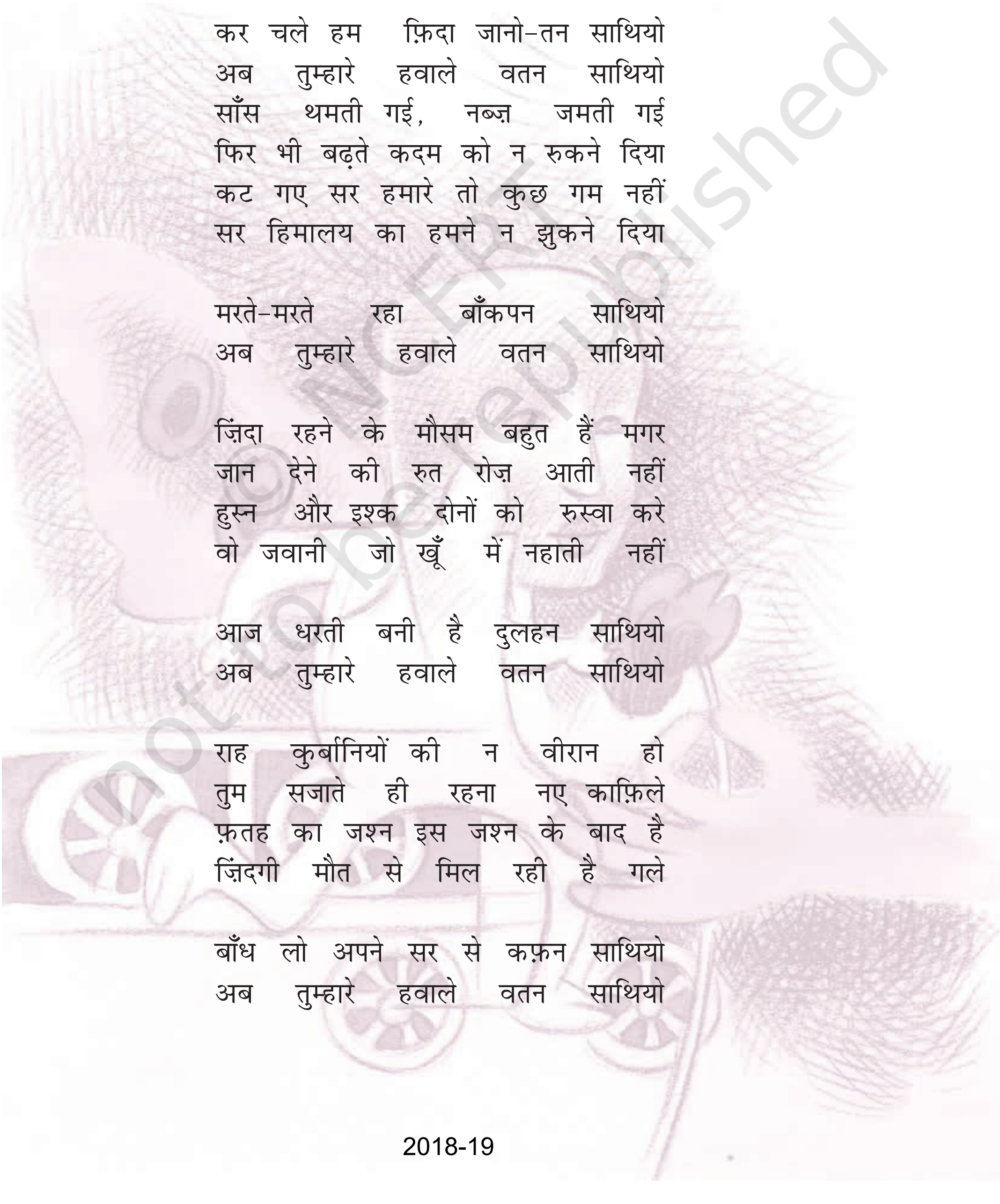

कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो
साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई
फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया
कट गए सर हमारे तो कुछ गम नहीं
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया

मरते-मरते रहा बाँकपन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

ज़िंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर
जान देने की रुत रोज़ आती नहीं
हुस्न और इश्क दोनों को रुस्वा करे
वो जवानी जो खूँ में नहाती नहीं

आज धरती बनी है दुलहन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

राह कुर्बानियों की न वीरान हो
तुम सजाते ही रहना नए काफ़िले
फ़तह का जश्न इस जश्न के बाद है
ज़िंदगी मौत से मिल रही है गले

बाँध लो अपने सर से कफ़न साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

© NCERT not to be republished

खींच दो अपने खूँ से ज़मीं पर लकीर
इस तरफ़ आने पाए न रावन कोई
तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे
छू न पाए सीता का दामन कोई
राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।

प्रश्न-अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. क्या इस गीत की कोई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है?
2. 'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया', इस पंक्ति में हिमालय किस बात का प्रतीक है?
3. इस गीत में धरती को दुलहन क्यों कहा गया है?
4. गीत में ऐसी क्या खास बात होती है कि वे जीवन भर याद रह जाते हैं?
5. कवि ने 'साथियो' संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है?
6. कवि ने इस कविता में किस काफ़िले को आगे बढ़ाते रहने की बात कही है?
7. इस गीत में 'सर पर कफ़न बाँधना' किस ओर संकेत करता है?
8. इस कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए–

1. साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई
   फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया
2. खींच दो अपने खूँ से ज़मीं पर लकीर
   इस तरफ़ आने पाए न रावन कोई
3. छू न पाए सीता का दामन कोई
   राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो

भाषा अध्ययन

1. इस गीत में कुछ विशिष्ट प्रयोग हुए हैं। गीत के संदर्भ में उनका आशय स्पष्ट करते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

   कट गए सर, नब्ज़ जमती गई, जान देने की रुत, हाथ उठने लगे

© NCERT not to be republished

2. ध्यान दीजिए संबोधन में बहुवचन 'शब्द रूप' पर अनुस्वार का प्रयोग नहीं होता; जैसे—भाइयो, बहिनो, देवियो, सज्जनो आदि।

योग्यता विस्तार

1. कैफ़ी आज़मी उर्दू भाषा के एक प्रसिद्ध कवि और शायर थे। ये पहले गज़ल लिखते थे। बाद में फ़िल्मों में गीतकार और कहानीकार के रूप में लिखने लगे। निर्माता चेतन आनंद की फ़िल्म 'हकीकत' के लिए इन्होंने यह गीत लिखा था, जिसे बहुत प्रसिद्धि मिली। यदि संभव हो सके तो यह फ़िल्म देखिए।
2. 'फ़िल्म का समाज पर प्रभाव' विषय पर कक्षा में परिचर्चा आयोजित कीजिए।
3. कैफ़ी आज़मी की अन्य रचनाओं को पुस्तकालय से प्राप्त कर पढ़िए और कक्षा में सुनाइए। इसके साथ ही उर्दू भाषा के अन्य कवियों की रचनाओं को भी पढ़िए।
4. एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा कैफ़ी आज़मी पर बनाई गई फ़िल्म देखने का प्रयास कीजिए।

परियोजना कार्य

1. सैनिक जीवन की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए एक निबंध लिखिए।
2. आज़ाद होने के बाद सबसे मुश्किल काम है 'आज़ादी बनाए रखना'। इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
3. अपने स्कूल के किसी समारोह पर यह गीत या अन्य कोई देशभक्तिपूर्ण गीत गाकर सुनाइए।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

फ़िदा	–	न्योछावर
हवाले	–	सौंपना
रुत	–	मौसम
हुस्न	–	सुंदरता
रुस्वा	–	बदनाम
खूँ	–	खून
काफ़िले	–	यात्रियों का समूह
फ़तह	–	जीत
जश्न	–	खुशी मनाना
नब्ज़	–	नाड़ी
कुर्बानियाँ	–	बलिदान
ज़मीं	–	ज़मीन
लकीर	–	रेखा

© NCERT not to be republished

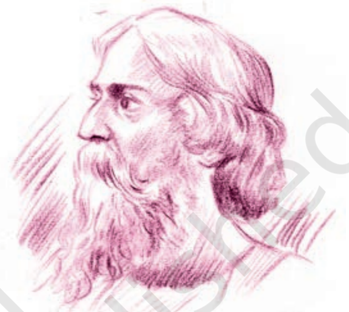

रवींद्रनाथ ठाकुर

(1861-1941)

6 मई 1861 को बंगाल के एक संपन्न परिवार में जन्मे रवींद्रनाथ ठाकुर नोबेल पुरस्कार पाने वाले पहले भारतीय हैं। इनकी शिक्षा–दीक्षा घर पर ही हुई। छोटी उम्र में ही स्वाध्याय से अनेक विषयों का ज्ञान अर्जित कर लिया। बैरिस्ट्री पढ़ने के लिए विदेश भेजे गए लेकिन बिना परीक्षा दिए ही लौट आए।

रवींद्रनाथ की रचनाओं में लोक–संस्कृति का स्वर प्रमुख रूप से मुखरित होता है। प्रकृति से इन्हें गहरा लगाव था। इन्होंने लगभग एक हज़ार कविताएँ और दो हज़ार गीत लिखे हैं। चित्रकला, संगीत और भावनृत्य के प्रति इनके विशेष अनुराग के कारण रवींद्र संगीत नाम की एक अलग धारा का ही सूत्रपात हो गया। इन्होंने शांति निकेतन नाम की एक शैक्षिक और सांस्कृतिक संस्था की स्थापना की। यह अपनी तरह का अनूठा संस्थान माना जाता है।

अपनी काव्य कृति *गीतांजलि* के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित हुए रवींद्रनाथ ठाकुर की अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं–*नैवैद्य, पूरबी, बलाका, क्षणिका, चित्र और सांध्यगीत, काबुलीवाला* और सैकड़ों अन्य कहानियाँ; उपन्यास–*गोरा, घरे बाइरे* और *रवींद्र के निबंध।*

पाठ प्रवेश

तैरना चाहने वाले को पानी में कोई उतार तो सकता है, उसके आस-पास भी बना रह सकता है, मगर तैरना चाहने वाला जब स्वयं हाथ-पाँव चलाता है तभी तैराक बन पाता है। परीक्षा देने जाने वाला जाते समय बड़ों से आशीर्वाद की कामना करता ही है, बड़े आशीर्वाद देते भी हैं, लेकिन परीक्षा तो उसे स्वयं ही देनी होती है। इसी तरह जब दो पहलवान कुश्ती लड़ते हैं तब उनका उत्साह तो सभी दर्शक बढ़ाते हैं, इससे उनका मनोबल बढ़ता है, मगर कुश्ती तो उन्हें खुद ही लड़नी पड़ती है।

प्रस्तुत पाठ में कविगुरु मानते हैं कि प्रभु में सब कुछ संभव कर देने की सामर्थ्य है, फिर भी वह यह कतई नहीं चाहते कि वही सब कुछ कर दें। कवि कामना करता है कि किसी भी आपद-विपद में, किसी भी द्वंद्व में सफल होने के लिए संघर्ष वह स्वयं करे, प्रभु को कुछ न करना पड़े। फिर आखिर वह अपने प्रभु से चाहते क्या हैं?

रवींद्रनाथ ठाकुर की प्रस्तुत कविता का बंगला से हिंदी में अनुवाद श्रद्धेय आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने किया है। द्विवेदी जी का हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में अपूर्व योगदान है। यह अनुवाद बताता है कि अनुवाद कैसे मूल रचना की 'आत्मा' को अक्षुण्ण बनाए रखने में सक्षम है।

© NCERT not to be republished

आत्मत्राण

विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं
केवल इतना हो (करुणामय)
कभी न विपदा में पाऊँ भय।
दुःख-ताप से व्यथित चित्त को न दो सांत्वना नहीं सही
पर इतना होवे (करुणामय)
दुख को मैं कर सकूँ सदा जय।
कोई कहीं सहायक न मिले
तो अपना बल पौरुष न हिले;
हानि उठानी पड़े जगत् में लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में ना मानूँ क्षय।।
मेरा त्राण करो अनुदिन तुम यह मेरी प्रार्थना नहीं
बस इतना होवे (करुणायम)
तरने की हो शक्ति अनामय।
मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही।
केवल इतना रखना अनुनय–
वहन कर सकूँ इसको निर्भय।
नत शिर होकर सुख के दिन में
तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में।
दुःख-रात्रि में करे वंचना मेरी जिस दिन निखिल मही
उस दिन ऐसा हो करुणामय,
तुम पर करूँ नहीं कुछ संशय।।

अनुवाद : हजारीप्रसाद द्विवेदी

© NCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. कवि किससे और क्या प्रार्थना कर रहा है?
2. 'विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं'–कवि इस पंक्ति के द्वारा क्या कहना चाहता है?
3. कवि सहायक के न मिलने पर क्या प्रार्थना करता है?
4. अंत में कवि क्या अनुनय करता है?
5. 'आत्मत्राण' शीर्षक की सार्थकता कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।
6. अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए आप प्रार्थना के अतिरिक्त और क्या-क्या प्रयास करते हैं? लिखिए।
7. क्या कवि की यह प्रार्थना आपको अन्य प्रार्थना गीतों से अलग लगती है? यदि हाँ, तो कैसे?

(ख) निम्नलिखित अंशों का भाव स्पष्ट कीजिए–

1. नत शिर होकर सुख के दिन में
   तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में।
2. हानि उठानी पड़े जगत् में लाभ अगर वंचना रही
   तो भी मन में ना मानूँ क्षय।
3. तरने की हो शक्ति अनामय
   मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही।

योग्यता विस्तार

1. रवींद्रनाथ ठाकुर ने अनेक गीतों की रचना की है। उनके गीत-संग्रह में से दो गीत छाँटिए और कक्षा में कविता-पाठ कीजिए।
2. अनेक अन्य कवियों ने भी प्रार्थना गीत लिखे हैं, उन्हें पढ़ने का प्रयास कीजिए; जैसे–

   (क) महादेवी वर्मा–क्या पूजा क्या अर्चन रे!

   (ख) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला–दलित जन पर करो करुणा।

   (ग) इतनी शक्ति हमें देना दाता
   मन का विश्वास कमज़ोर हो न
   हम चलें नेक रस्ते पर हम से
   भूल कर भी कोई भूल हो न

   इस प्रार्थना को ढूँढ़कर पूरा पढ़िए और समझिए कि दोनों प्रार्थनाओं में क्या समानता है? क्या आपको दोनों में कोई अंतर भी प्रतीत होता है? इस पर आपस में चर्चा कीजिए।

© NCERT not to be republished

परियोजना कार्य

1. रवींद्रनाथ ठाकुर को नोबेल पुरस्कार पाने वाले पहले भारतीय होने का गौरव प्राप्त है। उनके विषय में और जानकारी एकत्र कर परियोजना पुस्तिका में लिखिए।
2. रवींद्रनाथ ठाकुर की 'गीतांजलि' को पुस्तकालय से लेकर पढ़िए।
3. रवींद्रनाथ ठाकुर ने कलकत्ता (कोलकाता) के निकट एक शिक्षण संस्थान की स्थापना की थी। पुस्तकालय की मदद से उसके विषय में जानकारी एकत्रित कीजिए।
4. रवींद्रनाथ ठाकुर ने अनेक गीत लिखे, जिन्हें आज भी गाया जाता है और उसे रवींद्र संगीत कहा जाता है। यदि संभव हो तो रवींद्र संगीत संबंधी कैसेट व सी.डी. लेकर सुनिए।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

विपदा – विपत्ति/मुसीबत
करुणामय – दूसरों पर दया करने वाला
दु:ख ताप – कष्ट की पीड़ा
व्यथित – दुखी
सहायक – मददगार
पौरुष – पराक्रम
क्षय – नाश
त्राण – भय निवारण / बचाव / आश्रय
अनुदिन – प्रतिदिन
अनामय – रोग रहित / स्वस्थ
सांत्वना – ढाँढ़स बँधाना, तसल्ली देना
अनुनय – विनय
नत शिर – सिर झुकाकर
दु:ख रात्रि – दुख से भरी रात
वंचना – धोखा देना / छलना
निखिल – संपूर्ण
संशय – संदेह

© NCERT not to be republished